एम. ए. हिन्दी चतुर्थ सेमेस्टर – चतुर्थ प्रश्न पत्र

लोक साहित्य एवं छत्तीसगढ़ी साहित्य

[डॉ0 आर के टण्डन (खरसिया) के द्वारा तैयार]

1. लोक शब्द का मूल अर्थ है – देखने वाला।
2. ऋग्वेद में लोक का अर्थ लिया गया – साधारण जनता या जन से।
3. पुराणों में लोक शब्द प्रयुक्त हुआ – स्थान के पर्यायवाची के रूप में।
4. हिन्दी साहित्य में लोक शब्द का प्रयोग किया गया – लोग शब्द के लिए।
5. लोक शब्द अंग्रेजी के किस शब्द का पर्याय है – फोक।
6. ज्ञान राशि के संचित कोश का नाम ही साहित्य है, किसने कहा – आ0 महाबीर प्रसाद द्विवेदी।
7. लिपि के आधार पर साहित्य के कितने भेद हैं – दो, लिखित साहित्य और मौखिक साहित्य।
8. लोकवार्ता को अंग्रेजी में कहा जाता है – फोकलोर।
9. भारत की संस्कृति की दो धाराएँ – शिष्ट संस्कृति और लोक संस्कृति।
10. लोक संस्कृति के दो तत्त्व – आध्यात्मिक तत्त्व और लौकिक तत्त्व।
11. लोक साहित्य के कितने भेद हैं – 6, लोक गीत, लोक कथा, लोक गाथा, लोक नाट्य, लोक सुभाषित, पहेलियाँ–कहावतें।
12. नवजात बच्चे की प्रथम किलकारी की अभिव्यक्ति लोक साहित्य है, किसने कहा – डॉ0 मीनाक्षी बोरणा।
13. वास्तव में लोक साहित्य वह मौखिक अभिव्यक्ति है, जो भले ही किसी व्यक्ति ने गढ़ी हो, पर आज जिसे सामान्य लोक–समूह अपना मानता है, किसने कहा – डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा।
14. छत्तीसगढ़ के लोक नाट्य हैं – रहसलीला, नाचा, गम्मत।
15. छत्तीसगढी भाषा अर्धमागधी की दुहिता एवं अवधी की सहोदरा है, किसने कहा – प्यारेलाल गुप्त।
16. डॉ0 नरेन्द्रदेव वर्मा के अनुसार छ.गढ़ी साहित्य के इतिहास का कालक्रम –
    1. गाथा युग – 943 ई0 से 1443 ई0।
    2. भक्ति युग – 1443 ई0 से 1843 ई0।
    3. आधुनिक युग – 1843 ई0 से अब तक।

17. '20वीं शताब्दी के प्रथम दशक में छत्तीसगढी साहित्य का उद्भव हुआ और इसके जनक पं0 लोचन प्रसाद पाण्डेयथे' किसने कहा – डॉ0 नन्दकिशोर तिवारी।
18. भक्ति काल के प्रमुख साहित्यकार – संत धर्मदास, गोपाल मिश्र, माखन मिश्र, बाबू रेवाराम, प्रहलाद दुबे, हीरालाल काव्योपाध्याय।
19. छ.ग. के पाणिनी कहा जाता है – हीरालाल काव्योपाध्याय को।
20. खूब तमाशा किसने लिखा – गोपाल मिश्र।
21. छत्तीसगढी व्याकरण की रचना किसने की – हीरालाल काव्योपाध्याय।

उपन्यास

22. छत्तीसगढी का प्रथम उपन्यास – हीरू के कहिनी, लेखक – वंशीधर पाण्डेय, प्रकाशन वर्ष – 1926
23. छत्तीसगढी उपन्यास 'दियना के अंजोर' का लेखक – शिवशंकर शुक्ल।
24. छत्तीसगढी उपन्यास 'मोंगरा' के लेखक – शिवशंकर शुक्ल।
25. छत्तीसगढी उपन्यास 'चंदा अमरित बरसाइस' के लेखक – लखनलाल गुप्त।
26. छत्तीसगढी उपन्यास 'फुटहा करम' के लेखक – ठाकुर हृदयसिंह चौहान।
27. छत्तीसगढी उपन्यास 'कुल के मरजाद' के लेखक – केयूर भूषण।
28. छत्तीसगढी उपन्यास 'छेरछेरा' के लेखक – पं0 कृष्णकुमार शर्मा।
29. छत्तीसगढी उपन्यास 'उढ़रिया' के लेखक – डॉ0 जे आर सोनी।
30. छत्तीसगढी उपन्यास 'दियना के अंजोर' (प्रकाशन वर्ष 1964) किस उपन्यास का छत्तीसगढी अनुवाद है – भाभी का मंदिर, प्रकाशन वर्ष 1958.
31. छत्तीसगढी उपन्यास 'आवा' किसकी कृति है – परदेशी राम वर्मा।

नाटक

32. डॉ0 खूबचंद बघेल के द्वारा रचित नाटकों के नाम – करम छड़हा, ऊँच–नीच, बेटवा बिहाव, गरकट्टा, लेड़गा, किसान के करलइ, जरनल सिंह।
33. टिकेंद्र टिकरिहा विरचित नाटक – गंवइहा, पितर पिंडा, सउत के डर, साहूकार ले छूटकारा, नवा बिहान, नाक में चूना, देवार डेरा।
34. छत्तीसगढी नाटक 'मैं बइला नों हव' के लेखक हैं – परदेशी राम वर्मा।
35. छत्तीसगढी नाटक 'परेमा' के लेखक – नंद किशोर तिवारी।
36. छत्तीसगढी नाटक 'दुलारी' के लेखक – सुधा वर्मा।
37. छत्तीसगढी नाटक 'जागे जागे सुतिहा गो', 'हरदी पींयर झांगा पांगा' के लेखक – रामनाथ साहू।
38. छत्तीसगढी नाटक 'दुब्बर बर दू असाड़' के लेखक – जीवन सिंह ठाकुर।
39. छत्तीसगढी नाटक 'सोन कैना' के लेखक – केयूर भूषण।

40. 'चरनदास चोर', 'बहादुर कलारीन' के लेखक – हबीब तनवीर।
41. दसमत कैना, कारी, लोरिक चंदा, गम्मतिहा, हरेली के लेखक – प्रेम साइमन।
42. छत्तीसगढी काव्य नाटिका 'अइसनेच रात पहाही' के लेखक – जीवन यदु।
43. छत्तीसगढी नुक्कड़ नाटक 'दो पाँव का आदमी', 'पीरा' के लेखक – सुरेन्द्र दुबे।
44. छत्तीसगढी लोक नाट्य 'मोला लागत हे मतासी' के लेखक – मकसूदन राम साहू।
45. छत्तीसगढी हास्य व्यंग्य नाटक 'मीठ लबरा सियान' के लेखक – गिरिवरदास मानिकपुरी।
46. छत्तीसगढी प्रहसन 'मोला गुरु बनाई लेते' के लेखक हैं – डॉ0 नरेंद्र देव वर्मा।

एकांकी

47. कपिलनाथ कश्यप – अंधियारी रात, नवा बिहान, गुरांवट बिहाव, किसान अउ भगवान, गोहार, डहर के फूल, पापी पेट।
48. नारायण लाल परमार – मतवार एवं दूसर एकांकी।
49. राम कैलाश तिवारी – दिशा, भांटो तोर मेछा।
50. संतोष चौबे – ठोम्हा भर चाउर, चोर ह चिल्लाइस चोर चोर।
51. सरला शर्मा – एक संगवारी।
52. महेत्तर राम साहू – सब परे हे चक्कर म।

निबंध

53. केयूर भूषण – राड़ी ब्राम्हन के दुर्दशा (1968), इसे प्रथम निबंध माना जाता है।
54. लखनलाल गुप्त – गोठ बात, सोनपान।
55. कपिलनाथ कश्यप – निसैनी।
56. डॉ0 पालेश्वर प्रसाद शर्मा – प्रबंध पाटल, सुरुज साखी हे।
57. समाचार पत्रों में 'गुड़ी के गोठ' स्तंभ के माध्यम से छत्तीसगढी निबंध को किसने समृद्ध किया – डॉ0 पालेश्वर प्रसाद शर्मा।
58. डॉ0 निरूपमा शर्मा – इंद्रधनुषी छत्तीसगढ।
59. सरला शर्मा – आखर के अरघ, सुन संगवारी।
60. सुधा वर्मा – तरिया के आंसू, परिया धरती के सिंगार, बरबर के गोठ।
61. जीवन यदु – लोक स्वप्न में लिली हिंसा
62. दानेश्वर शर्मा – लोक दर्शन
63. लक्ष्मण मस्तुरिया – माटी कहे कुम्हार से।
64. गया राम साहू – जानो अतका बात।

कहानी

65. डॉ0 पालेश्वर शर्मा – गोरसी के गोठ।
66. डॉ0 नरेन्द्र देव वर्मा – पुरखिन के गोठ, लोखन के नेवता, भोरहा, तच्छक के कहिनी।
67. शंकर लाल शुक्ल – मनखे ला कतेक भूँईया चाही।
68. ध्रुवराम वर्मा – हाय रे मोर मुसर, तैं नहिं दुसर, तीन साला तरिया, छेरी चरवाहा, आव बादर बरस पानी, हाय रे मोर धमना और संगवारी।
69. रंजन लाल पाठक – खुरबेटा, लेड़गा मंडल।
70. शिवशंकर शुक्ल – रधिया, डोकरी के कहिनी।
71. नारायण लाल परमार – मितान, सुन्ना मंदिर।
72. केयूर भूषण – मोहन के बंसरी, कल्याणी, हाय तोला नइ बचाए सकेंव, बताना एमा काखर दोस, आँसू म फिले अंचरा (कहानी संग्रह)।
73. लखनलाल गुप्त – सरग ले डोला आइस, देवरानी जेठानी, मोर पांखी, मोर सोन तँय झटकुन बाढ़ जा, अगोरा।
74. टिकेन्द्र टिकरिहा – येती के मनखे
75. हृदय सिंह चौहान – सुहागा, पुतरी, दाईज।
76. 'वास्तव में चौहान जी छत्तीसगढ़ी कथा साहित्य के प्रेमचंद हैं' किसने कहा – डॉ0 विनयकुमार पाठक।
77. कृष्णकुमार शर्मा – डॉक्टर ले बने जमराज।
78. कपिलनाथ कश्यप – डहर के कांटा, डहर के फूल।
79. छत्तीसगढ़ी कहानियों का दूसरा दौर प्रारम्भ होता है – 1980 के दशक से ...
80. श्यामलाल चतुर्वेदी – भोलवा भोलाराम बनिस (1995)।
81. डॉ0 विनयकुमार पाठक – तभे चिरई उड़िगे।
82. 'भकलू हरदी गाँव डहर' आकाशवाणी रायपुर से प्रसारित हुई थी, यह किसकी रचना है – डॉ0 विनय कुमार पाठक।
83. छत्तीसगढ़ी लघु कथा के प्रवर्तक हैं – रंजनलाल पाठक।
84. बिहारीलाल साहू – सुरूज पोटारिस अंधियार।
85. डॉ0 राजेन्द्र सोनी – खोलबहरा तोला गांधी बनाबोन (50 लघु कथाओं का संग्रह)।
86. केयूर भूषण – डोंगराही रद्दा, कालू भगत।
87. सरला शर्मा – सुरता के बादर।
88. सुधा वर्मा – कोख में बसेरा।
89. परदेशी राम वर्मा – बिदा (कुष्ठ उन्मूलन पर केंद्रित)।

90. सुशील भोले – ढेंकी।
91. बद्री सिंह कटहरिया – बड़की भौजी।

महाकाव्य

92. प्रथम महाकाव्य 'श्री रामकथा' के लेखक – कपिलनाथ कश्यप।
93. द्वितीय महाकाव्य 'श्री कृष्ण कथा' के लेखक – कपिलनाथ कश्यप।
94. महाकाव्य 'गरीबा' के लेखक – नूतनप्रसाद शर्मा।
95. महाकाव्य 'गरीबा' को कितने पांतों में विभक्त किया गया है – दस (चरोटा पांत, धनहा पांत, कोदो पांत, लाखड़ी पांत, बंगाला पांत, तिली पांत, चनवारी पांत, अरसी पांत, गंहुवारी पांत, राहेर पांत)।
96. महाकाव्य 'कौशिल्या के कोसला' (प्रकाशन वर्ष 2020) की लेखिका – शकुंतला शर्मा।
97. महाकाव्य 'कौशिल्या के कोसला' कितने सर्गों में विभाजित छन्द बद्ध काव्यमयी रचना है – 17.

छत्तीसगढ़ी दानलीला

98. छत्तीसगढ़ी काव्य में भारतेंदु के रूप में विख्यात कवि हैं – पं0 सुंदरलाल शर्मा।
99. सतनामियों को राजीव लोचन मंदिर में किसने प्रवेश कराया –पं0 सुंदरलाल शर्मा।
100. पं0 सुंदरलाल शर्मा ने स्थापना की – राजिम में संस्कृत पाठशाला, रायपुर में सतनामी आश्रम, राजिम में ब्रम्हचर्याश्रम, धमतरी में अनाथालय।
101. 1920 में धमतरी में कण्डेल नहर सत्याग्रह की शुरूआत की – पं0 सुंदरलाल शर्मा ने।
102. छत्तीसगढ़ का गांधी कहा जाता है – पं0 सुंदरलाल शर्मा को।
103. 'छत्तीसगढ़ी दान लीला' (खण्ड काव्य, 1905) के कवि – पं0 सुंदरलाल शर्मा।
104. छत्तीसगढ़ी भाषा में पं0 सुंदरलाल शर्मा की अन्य रचनाएँ – ब्राम्हण गीतावाली, सतनामी पुराण।
105. छत्तीसगढ़ी मासिक पत्रिका 'दुलरवा' का प्रकाशन – पं0 सुंदरलाल शर्मा।
106. जेल में रहते हुए 'श्री कृष्ण जन्म स्थान पत्रिका' का संचालन – पं0 सुंदरलाल शर्मा।
107. छत्तीसगढ़ी दानलीला है – श्री कृष्ण भक्ति पर आधारित खण्डकाव्य।
108. छत्तीसगढ़ी दानलीला में किस रस की प्रधानता है – श्रृंगार रस।
109. छत्तीसगढ़ी दानलीला में राधा एवं सखियों का मार्मिक वर्णन तथा इनका कृष्ण के साथ कटाक्षपूर्ण संवाद का वर्णन है।